अफगानिस्तान के संसद भवन की आधारशिला रखने के अवसर पर आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री का भाषण

दिनांक 29 अगस्त, 2005
काबुल

यह मेरे लिए बड़े ही सम्मान और सौभाग्य की बात है कि मैं आज यहां अफगानिस्तान के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू करने के अवसर पर उपस्थित हुआ हूं। यह एक ऐसा सम्मान है जो मुझे अफगानिस्तान के एक मित्र के रूप में और भारत, जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और इस क्षेत्र का सबसे प्राचीन देश है, के लोगों के एक प्रतिनिधि के रूप में विशेष तौर पर संतोष प्रदान करता है।

आज जब बाबा-ए-मिल्लत द्वारा अफगानिस्तान इस्लामिक गणतंत्र के संसद भवन की आधार-शिला रखी जा रही है तो एक ऐसे पौधे का रोपण किया जा रहा है जो आपके पालन-पोषण और देखरेख से लोकतंत्र के एक मजबूत" पंजा चिनार" के वृक्ष के रूप में विकसित होगा।

प्रतिनिधित्व लोकतंत्र का सार है। जब यह भवन बनकर तैयार हो जाएगा तो यह अफगानिस्तान में लोकतंत्र का हृदय होगा। हम समझते हैं कि लोकतांत्रिक संस्थाओं को प्रोत्साहित और संपोषित करने और उन्हें बढ़ावा देने की जरूरत है। हम यह भी मानते हैं कि इन्हें हरेक देश की संस्कृति, मूल्यों और स्वाभाविक प्रकृति के अनुसार विकसित और तैयार किया जाना चाहिए।

हम विश्व लोकतांत्रिक पहल के जरिए अन्य लोकतांत्रिक देशों के साथ भागीदारी कर रहे हैं और हमने संयुक्त राष्ट्र लोकतांत्रिक कोष में 10 मिलियन अमेरिकी डालर का अंशदान दिया है जो स्वतंत्रता, समानता और मैत्री के शाश्वत मूल्यों पर आधारित संस्थाओं को बढ़ावा देने के लिए इस्तेमाल में लाया जाएगा।

अफगानिस्तान एक युवा लोकतांत्रिक देश हो सकता है, किन्तु यह हमेशा से एक बहुलवादी समाज रहा है जिसमें विभिन्न जातीय और भाषाई समूहों का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। अफगानिस्तान के लोगों में *लोया जिरगा* जैसी संस्थाओं के जरिए लोकतांत्रिक बहस करने की परम्परा है। अफगानिस्तान में आम सहमति से निर्णय लेने की प्रथा सदियों पुरानी है।

हमने आपातकालीन लोया जिरगा और संवैधानिक लोया जिरगा दोनों के सफलतापूर्वक निर्णय के जरिए इस लोकतांत्रिक संस्कृति की पुष्टि होते देखी है। जिस तरह से अंतरराष्ट्रीय मीडिया और पर्यवेक्षकों की देखरेख में इस कार्य का संचालन किया गया उसकी हम सराहना और सम्मान करते हैं और अपने अफगान भाइयों को इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए सलाम करते हैं। यह एक सुखद संयोग की बात है कि 26 जनवरी जहां भारत के गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है वहीं सन् 2004 में इसी दिन अफगानिस्तान का संविधान भी अस्तित्व में आया था।

लोकतंत्र खुले समाजों में फलता-फूलता है। किन्तु खुले समाजों, चाहे वह प्राचीन हों अथवा युवा, सभी को आज विश्व में बढ़ते आतंकवाद से समान रूप से खतरा बना हुआ है। वस्तुतः हमारे समाजों की खुली संस्कृति हमें और भी अधिक कमजोर और जोखिम भरा बना देती है। वैश्वीकरण ने विश्व के राष्ट्रों को एक-दूसरे के निकट ला दिया है तथा एक-दूसरे पर निर्भर बना दिया है। विश्व स्तर पर आतंकवाद से प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए लोकतांत्रिक देशों को मिलकर काम करने की जरूरत है। इस खतरे का मुकाबला कर रहे लोकतांत्रिक देशों के इस गठबंधन में अफगानिस्तान की एक अलग स्थिति है। हम अफगानिस्तान की सरकार और यहां के लोगों के साथ काम करने के लिए तैयार हैं ताकि अफगानिस्तान फिर कभी आतंकवादियों का गढ़ अथवा शरणस्थली न बन पाए।

महामहिम, देवियो और सज्जनो,

एक सक्रिय लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा संविधान के पन्नों में निहित नहीं होती। बल्कि यह उस सदन में होगी जहां वोलेसी जिरगा तथा मेशरानों जिरगा के चुने हुए प्रतिनिधि बैठकर ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा करेंगे। अफगान संसद के निर्माण में आपके साथ शामिल होने के हमारे प्रयासों से हमारे दोनों देशों तथा इनके लोगों के बीच एक नए और प्रगाढ़ मैत्रीपूर्ण संबंधों की शुरूआत हुई है। यह इस बात का द्योतक है कि हम एक लोकतांत्रिक, स्थायी और खुशहाल अफगानिस्तान के लिए आप सभी के साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

धन्यवाद ।